पटना साईंस महाविद्यालय के परिसर मे शताब्दी समारोह (14-10-2017) के अवसर पर कुलपति का स्वागत भाषण

ज्ञान-पुंज के दूत भगवान बुद्ध, महावीर, आर्यभट्ट, चाणक्य ओर प्रियदर्शी अशोक की पवित्र भूमि, गंगा तट अवस्थित पाटलिपुत्र की इस पावन धरती पर तथा 125 करोड़ से अधिक भारतीयों के आशा और अभिलाषा के प्रतीक श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत करते हुए मेरे पास भाषा ज्ञान और शब्दों का अकाल हैं फिर भी मैं पटना विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, कर्मियों, विद्यार्थियों और पटना नगरवासियों की तरफ से आपका स्वागत करते हुए अपने आप को गौरान्वित अनुभव कर रहा हूँ। आपके नेतृत्व में देश ने हर क्षेत्र में लम्बी छलांग लगाई है और अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की पहचान ओर आवाज को सम्मान मिला है। आप भारत की विरासत और विकास को जिस तरह आगे ले जा रहे हैं वह गागर में सागर भरने जैसा है। यह हम सबों के लिए गौरव की बात है।

मंचासीन महामहिम राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री सत्य पाल मलिक जी, बिहार राज्य के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार जी, माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री राम विलास पासवान जी, माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद जी, माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी जी, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री उपेन्द्र कुशवाहा जी, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे जी, पटना हाई कोर्ट के माननीय न्यायाधीशगण, बिहार राज्य के सभी मंत्रीगण, सांसद, विधान सभा सदस्य, पार्षद, पटना के महापौर, उप-महापौर, वर्तमान एवं निवर्तमान कुलपतिगण, पटना विश्वविद्यालय के संकायाध्यक्ष, शिक्षकगण, कर्मचारीगण, पूर्ववर्ती छात्र, सेवानिवृत छात्र, सेवानिवृत शिक्षक एवं कर्मचारीवृन्द उपस्थित प्यारे छात्र-छात्राओं तथा वे सभी छात्र जो उपस्थित नहीं हो सके किन्तु अपने-अपने निश्चित जगहों पर TV Channel की मदद से इस कार्यक्रम को देख रहे हैं, जिला प्रशासन के सभी कर्मी, मीडिया प्रतिनिधि, बहनों एवं बंधुओं ! किसी भी संस्था के जीवन में 100 वर्षों का इतिहास स्वतः गौरव का प्रतीक है। 1917 में बिहार में दो बड़ी घटना हुई थी, चंपारण आन्दोलन तथा पटना विश्वविद्यालय की स्थापना। चंपारण आन्दोलन ने भारत में जन आन्दोलन को जन्म दिया तो पटना विश्वविद्यालय ने 100 वर्षों में शिक्षा का अलख जगाया। देश में सातवें सबसे पुराने विश्वविद्यालय ने शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, व्यापार, समाज सेवा, खेल-कूद, संस्कृति एवं सिनेमा, आदि के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है। इस विश्वविद्यालय की महत्ता का एक प्रतीक यह है कि मंचासीन 10 सदस्यों में से 8 सदस्य पटना विश्वविद्यालय के छात्र रह चुके हैं। इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हर कॉलेज की अपनी पहचान है। पटना कॉलेज (1863), पटना लॉ कॉलेज (1909), पटना ट्रेनिंग

कॉलेज (1908) देश में शिक्षा के अग्रणी केन्द्रों में है। बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा तथा नेपाल में महिलाओं के बीच उच्च शिक्षा का दीप पटना विश्वविद्यालय ने ही जलाया हैं

आज हमारे यहाँ 38 Post-graduate Departments और 10 कॉलेजों में करीब 28,000 छात्र-छात्राएँ हैं। छात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक है। 2015 के दीक्षांत में कुल 80% गोल्ड मेडल में छात्राओं ने कब्ज़ा किया था। बिहार में महिला सशक्तिकरण की सफलता की दिशा में पटना विश्वविद्यालय का बड़ा योगदान है। उच्च शिक्षा में छात्राओं के शुल्क माफ़ी तथा स्टुडेंट्स क्रेडिट कार्ड जैसी राज्य सरकार की योजनाओं से GER में भी वृद्धि हुई है।

हम एक भारत-श्रेष्ठ भारत, National Academic Depository Scheme के द्वारा Digitalization, Start-up के अंतर्गत Atal Incubation Centre की स्थापना का प्रयास कर रहे हैं। शिक्षा को सामुदायिक विकास से भी जोड़ने का कार्य हमारी नवीनतम प्राथमिकता है। विश्वविद्यालय के 101वें वर्ष से अर्थात् 2018 के नामांकन तक हम 12 नये स्नातकोत्तर विभागों की स्थापना करना चाहते हैं। इसमें Department of Computer Science, Disaster Management, Social work, Bio-technology, Women Studies, इत्यादि महत्वपूर्ण है।

बंधुओं 100वाँ साल के इस समारोह और अन्य काय्रक्रमों का हम सभी गवाह हैं। जब पुनः 100 वर्ष बाद यह विश्वविद्यालय 200वाँ समारोह मनायेगा तो हम-आप तो नहीं रहेंगें लेकिन इस समारोह की गाथा गाने के लिए कोई और नहीं पटना विश्वविद्यालय स्वयं गवाह रहेगा।

कार्यक्रम में जो भी खामियाँ रही हों, उसके लिए मैं जिम्मेवार हूँ और हर सफलता का श्रेय इस विश्वविद्यालय के शिक्षक, छात्र, कर्मचारी, जिला प्रशासन और यहाँ उपस्थित हर सदस्यों के नाम हैं।

जय भारत!
जय बिहार
जय पटना विश्वविद्यालय।